Plato's Theory of Justice

Dr. Shilpi Jaiswal
Assistant professor
Deptt of Political Science
U.P. College, Varanasi

प्लेटो और उनके विचार

- ग्रीक राजनीतिक विचार सुकरात से उत्पन्न हुआ। प्लेटो सुकरात के सबसे प्रतिभाशाली शिष्यों में से एक थे। प्लेटो को आज पश्चिमी राजनीतिक विचार का अग्रणी माना जाता है। ऐसा इसलिए है क्योंकि उनके गुरु सुकरात ने कोई लेखन नहीं किया था, और हम उनके विचारों को केवल प्लेटो के लेखन से ही जानते हैं।
- प्लेटो, जिसका मूल नाम अरिस्टोकल्स था, दर्शनशास्त्र का अध्ययन करने और "सत्य" की खोज करने में रुचि रखता था। सुकरात की दुखद मृत्यु के बाद, प्लेटो ने राज्य, कानून, न्याय, राजनीति और दर्शन के प्रश्नों पर विभिन्न रचनाएँ लिखीं। विशेष रूप से रिपब्लिक उनकी सबसे प्रसिद्ध रचनाओं में से एक है।

Plato's Theory of Justice

Since the tradition of Greek Philosophy considered ethics to be important, they believed that the state comes into existence for the sake of life and continues for the sake of a good life. Plato believed in the same dictum and held that the state exists to fulfil the necessities of human life. The origin of the state, therefore, owed its existence to the fulfilment of human needs, and the Greek philosophers saw society and state as the same.

- Unlike other living beings, human beings do not merely seek survival but essentially want to live a good life. Justice is the essential requirement to lead a good life. One cannot lead a good life without meeting their needs, and it's possible to meet one's needs only in the presence of Justice.

- The Republic discusses Justice in the form of a dialogue. This methodology is known as Dialectical Method, which Plato borrowed from his mentor, Socrates. The dialogue takes place between Socrates, Glaucon, Adeimantus, Cephalus and Thrasymachus. The dialogue concluded that if one were allowed to suppress another, there would be complete anarchy, and it would be difficult to have any state of affairs. To save oneself from any such suffering and to prevent injustice, men enter into a contract to prevent injustice upon themselves or on others. That is also how laws came into existence to codify standard human conduct and bring a sense of Justice.

Introduction

- **The question of justice has been central to every society, and in every age, it surrounds itself with debate. Justice has been the most critical part of a person's morality since time immemorial. Perhaps, it is for this reason that Plato, the ancient Greek philosopher, considered it crucial to reach a theory of justice.**

- **Finding out the principles of justice is the main concern in Plato's Republic, to the extent that it is also subtitled as 'Concerning Justice'. Plato viewed justice from a broad perspective. He defined justice as a condition in which each individual and each class in society performs its designated function without interfering with others. According to him, justice occurs when all the elements of society function in harmony, ensuring balance and order.**

- प्लेटो (Plato) प्राचीन ग्रीस के महान दार्शनिक थे, जिन्होंने न्याय, राजनीति, समाज और दर्शनशास्त्र पर गहन विचार प्रस्तुत किए। उनका न्याय सिद्धांत मुख्य रूप से उनकी प्रसिद्ध कृति "रिपब्लिक" (Republic) में मिलता है, जिसमें उन्होंने एक आदर्श राज्य की कल्पना की और बताया कि न्याय क्या है और यह समाज व व्यक्ति के जीवन में किस प्रकार कार्य करता है। प्लेटो का न्याय सिद्धांत उनके दार्शनिक विचारों का एक महत्वपूर्ण अंग है, जो आज भी राजनीतिक विज्ञान और दर्शन में प्रासंगिक माना जाता है।

Plato characterises human behaviour in three main sources:

- **Desire (or Appetite)** इच्छा (या भूख)
- **Emotion (or Spirit)** भावना (या आत्मा)
- **Knowledge (or Intellect)** ज्ञान (या बुद्धि)

न्याय की परिभाषा

- प्लेटो के अनुसार, न्याय केवल कानूनों का पालन करना या दंड प्रणाली तक सीमित नहीं है, बल्कि यह समाज और व्यक्ति के संतुलित विकास से संबंधित एक व्यापक अवधारणा है। उन्होंने न्याय को समाज और व्यक्ति के विभिन्न वर्गों में उचित सामंजस्य और कर्तव्यों के विभाजन के रूप में परिभाषित किया।
- प्लेटो ने न्याय को तीन स्तरों पर समझाया:

1. **व्यक्तिगत स्तर पर न्याय** – व्यक्ति के भीतर आत्मा के तीन तत्वों का सामंजस्य।
2. **सामाजिक स्तर पर न्याय** – समाज के तीन वर्गों का संतुलित संचालन।
3. **राजनीतिक स्तर पर न्याय** – आदर्श राज्य की स्थापना, जहाँ प्रत्येक वर्ग अपने उचित कर्तव्य का पालन करे।

न्याय का त्रिस्तरीय सिद्धांत

- प्लेटो ने अपने न्याय सिद्धांत को स्पष्ट करने के लिए आत्मा और राज्य की तुलना की और उन्हें तीन भागों में विभाजित किया।
- **1. व्यक्ति और आत्मा में न्याय**
- प्लेटो के अनुसार, प्रत्येक व्यक्ति की आत्मा तीन तत्वों से बनी होती है:

1. **बौद्धिक तत्व (Rational Element)** – जो बुद्धि और ज्ञान से संबंधित है।
2. **साहसी तत्व (Spirited Element)** – जो साहस और इच्छाशक्ति से संबंधित है।
3. **इच्छाशक्ति तत्व (Appetitive Element)** – जो भौतिक इच्छाओं, लालसाओं और आवश्यकताओं से संबंधित है।

- जब इन तीन तत्वों में उचित संतुलन और सामंजस्य होता है, तो व्यक्ति न्यायपूर्ण होता है। बुद्धि को शासन करना चाहिए, इच्छाशक्ति को इसे समर्थन देना चाहिए और लालसाओं को नियंत्रण में रहना चाहिए।

- **1. Justice in the Individual**
- Plato divided the human soul into three elements:

1. **Rational Element** – The highest part of the soul, representing wisdom, logic, and reasoning. It helps individuals make the right decisions.
2. **Spirited Element** – The middle part of the soul, associated with courage, willpower, and determination. It motivates individuals to act righteously.
3. **Appetitive Element** – The lowest part of the soul, representing desires, passions, and material needs. If unchecked, it can lead to immorality.

- **2. समाज में न्याय**
- प्लेटो ने समाज को भी तीन वर्गों में विभाजित किया, जो आत्मा के तत्वों के समानांतर हैं:

1. **दार्शनिक राजा (शासक वर्ग - Rulers)** – जो समाज का नेतृत्व करते हैं और बुद्धि का प्रतिनिधित्व करते हैं।
2. **योद्धा (सैनिक वर्ग - Guardians)** – जो समाज की रक्षा करते हैं और साहस का प्रतिनिधित्व करते हैं।
3. **श्रमिक (किसान, व्यापारी, कारीगर - Producers)** – जो आर्थिक उत्पादन और आजीविका चलाने का कार्य करते हैं और इच्छाशक्ति का प्रतिनिधित्व करते हैं।

- जब प्रत्येक वर्ग अपने कार्यों को उचित रूप से निभाता है और अपने स्वाभाविक गुणों के अनुसार कार्य करता है, तो समाज में न्याय स्थापित होता है। यदि कोई वर्ग अपने निर्धारित कर्तव्य से हटकर अन्य वर्गों के कार्यों में हस्तक्षेप करने लगे, तो समाज में अन्याय और अराजकता फैल जाती है।

- **2. Justice in Society**
- Plato divided society into three classes:

1. **Rulers (Philosopher-Kings)** – Representing wisdom and knowledge, they govern the state.
2. **Guardians (Warriors)** – Representing courage and discipline, they protect the state.
3. **Producers (Farmers, Artisans, Merchants)** – Representing the economic foundation, they engage in trade, production, and commerce.

- According to Plato, justice in society is achieved when each class performs its assigned role and does not interfere in the functions of others.

- **3. आदर्श राज्य में न्याय**
- प्लेटो के अनुसार, आदर्श राज्य वह होता है जहाँ न्याय तीनों वर्गों के बीच उचित संतुलन बनाए रखता है। इस राज्य में:
  - शासक बुद्धिमान होते हैं और वे राज्य को न्यायसंगत रूप से संचालित करते हैं।
  - सैनिक राज्य की रक्षा करते हैं और अनुशासन बनाए रखते हैं।
  - श्रमिक अपने व्यवसाय और उत्पादन कार्यों को सुचारू रूप से चलाते हैं।
- न्याय का अर्थ है कि प्रत्येक व्यक्ति और वर्ग अपने स्वाभाविक कर्तव्यों का पालन करे और दूसरे वर्गों के कार्यों में हस्तक्षेप न करे।

. Justice in the Ideal State

Plato’s ideal state is one where:

- **Rulers** govern wisely.
- **Guardians** maintain security and discipline.
- **Producers** contribute to economic stability.

Justice in the state means that each class performs its specific duty without encroaching upon the roles of other classes.

प्लेटो के न्याय सिद्धांत की आलोचना

- हालाँकि प्लेटो का न्याय सिद्धांत बहुत प्रभावशाली है, लेकिन इसकी कुछ आलोचनाएँ भी की गई हैं:

1. **अत्यधिक आदर्शवादी** – यह सिद्धांत व्यावहारिक रूप से लागू करना कठिन है, क्योंकि यह समाज को कठोर वर्गों में बाँटता है।
2. **लोकतंत्र का विरोध** – प्लेटो का न्याय सिद्धांत लोकतंत्र का समर्थन नहीं करता, क्योंकि वे मानते थे कि केवल दार्शनिक ही शासक होने चाहिए।
3. **व्यक्तिगत स्वतंत्रता की कमी** – इस सिद्धांत में व्यक्ति को उसकी स्वाभाविक क्षमताओं के अनुसार कार्य करने के लिए बाध्य किया जाता है, जिससे उसकी व्यक्तिगत स्वतंत्रता सीमित हो जाती है।

Criticism of Plato's Theory of Justice

- Despite its significance, Plato's theory faced several criticisms:

1. **Highly Idealistic** – It is difficult to implement practically due to its rigid classification of society.
2. **Anti-Democratic** – It opposes democracy, advocating for rule by philosopher-kings.
3. **Lack of Individual Freedom** – The theory restricts personal freedom by determining individuals' roles based on their abilities.
4. **Limited Social Mobility** – It does not allow individuals to move between social classes freely.

THANKS

DR. SHILPI JAISWAL